RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 43
सृष्टि संवत् 1960853116
24 जनवरी 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 43, 21/24 जनवरी 2016 तदनुसार 11 मार्गशीर्ष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

## तू कामनाओं का दाता

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

**अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि कं मुहुश्चिद्वि दीधयः।**
**सन्ति कामासो हरिवो ददिष्ट्व स्मो वयं सन्ति नो धियः।।**

-ऋ० ८।२१।६

**शब्दार्थ-अच्छ**-अच्छा, **च**-तो हम **त्वा**-तुझको **एना+नमसा**-इस नमस्कार से **वदामसि**-कहते हैं **किम्**-क्यों **मुहुः+चित्**-बार-बार तू **वि+दीधयः**-विचार करता है। **हरिवः**-पापहरणवाले हमारी। **कामासः**-अभिलाषाएं **सन्ति**-हैं और **त्वम्**-तू **ददिः**-दाता है। **इधर वयम्**-हम **स्मः**-हैं और **सन्ति**-हैं **नः**-हमारी **धियः**-बुद्धियां, क्रियाएं तथा धारण शक्तियां।

**व्याख्या**-भगवन! हम तेरे पास आए हैं। रिक्तहस्त आए हैं। तुझसे बात करने का क्या अधिकार! प्रभो! **'अभि त्वमिन्द्र नोनुमः'** [ऋ० ८।२१।५] हम झुक-झुककर बार-बार तुझे नमस्कार करते हैं और दीनबन्धो!

**वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम। -ऋ० ८।२१।४**

हम बन्धुरहित हैं, अबन्धुओं के बन्धु तुझको हम अपनाते हैं, अतः हम नए सम्बन्ध को सामने रखकर **'त्वैना नमसा वदामसि'**-इस नमस्कार द्वारा तुझसे बोलते हैं। इस नमस्कार से हमें तुझसे बोलने का, अपनी व्यथा-कथा सुनाने का अधिकार मिल जाता है।

प्रभो! क्या सोचते हो ? मुझमें अहंकार है। न, मेरे स्वामिन्! नमस्कार से मैंने अहंकार को मार दिया है। नम्र होकर तेरे दरबार में आया हूं। क्यों आया हूं ? अन्तर्यामिन्! तू हमारे **'विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्'**-सारे विचारों-आचारों का जाननेहारा है, तुझसे मेरा क्या छिपा है! फिर भी निवेदन करता हूं-**'सन्ति कामासः हरिवः'** पाप हारक प्यारे! हमारी कामनाएं हैं, इच्छाएं हैं, और **'ददिष्ट्व'** तू दाता है। याचक दाता के पास न जाए तो कहां जाए ? प्रभो! तूने ही कहा है-

**न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।**

-ऋ० १०।११७।४

वह मित्र नहीं जो साथ रहने वाले, अन्न मांगने वाले मित्र को नहीं देता है। सखे! मैं तेरे साथ रहता हूं। ऐसा साथ कि जिसे तू कभी भी नहीं छोड़ सकता। प्रभो! साहस है, तो छोड़ के दिखा। फिर तू क्यों नहीं देता ? दाता! अपने विरुद को कीर्ति को सार्थक कर। तेरी शोभा इसी में है कि याचक की झोली भर दे। क्या तेरे द्वार से लौट जाएं ? तूने ही कहा है कि-जो नहीं देता, उसके **'अपास्मात्प्रेयात्'** [ऋ० १०।११७।४] यहां से भाग जाए। परन्तु मैं कहां जाऊं ? किधर जाऊं ? तू कहता है-

**न तदोको अस्ति।** -ऋ० १०।११७।४

अदाता का घर-घर नहीं है। निःसन्देह यह बात सत्य है कि अदाता का घर-घर नहीं है, किन्तु तुम चाहे मुझे दो वा न दो, मेरे तो तुम ही घर हो। अपना घर छोड़कर कहां जाऊं ? कहते हो कि-

**'पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्'** [ऋ० १०।११७।४] किसी और दाता की खोज करो।

मैं और को क्यों खोजूं, क्यों चाहूं ? तुम जैसा कोई दाता हो भी। मेरे लिए ही नहीं, समस्त जगत् का तू ही दाता है और फिर-**'भद्रा इन्द्रस्य रातयः'** [ऋ० ८।६२।१] तेरे दान भले हैं। दूसरे के दानों का ज्ञान नहीं। जाने रोटी मांगने पर सोटी-पत्थर ही दे मारे। तू किसी भी अवस्था में अनिष्ट नहीं कर सकता, अतः नाथ! तुझे छोड़कर हम कहीं नहीं जाते। यहीं बैठते हैं।

**'स्मो वयं सन्ति नो धियः'** यह हम हैं और ये हैं हमारी बुद्धियां, कृतियां।

तू हमारे कर्मों के अनुसार ही दे। हम इसे भी तेरा दान समझते हैं। तू न दे तो हमारा क्या मान ? किन्तु तेरे द्वार पर धरना देने का अधिकार हम नहीं छोड़ सकते, अतः निश्चय कर लिया है कि या तो तुझसे लेके जाएंगे, या अपने प्राण तुझे दे जाएंगे। दोनों अवस्थाओं में हमें लाभ-ही-लाभ है, अतः-

**पर्जन्य इव ततनद्धि वृष्टया सहस्रमयुता ददत्।**

-ऋ० ८।२१।१८

हज़ारों-लाखों देता हुआ प्रभो! बादल की भांति वृष्टि के साथ गर्ज। महादानी! गर्ज, गर्ज! बरस, बरस! तर कर दे। कहीं से भी सूखा न रहने दे। तू **'भूरिदा ह्यसि श्रुतः'** बड़ा दाता प्रसिद्ध है। -स्वाध्याय संदोह से साभार

# ईश्वर भक्ति-क्यों और कैसे

-ले० रामप्यारा कश्यव 677, सैक्टर 16, पंचकूला

वैदिक मान्यता के अनुसार जीवात्मा को मानव चोला प्रभु से इस प्रयोजन से मिलता है कि वह इसके माध्यम से पुरुषार्थ करके मोक्ष, अर्थात् परमानन्द की प्राप्ति कर सके। पुरुषार्थ के ढंग ऋषियों ने अपने-अपने विचार और अनुभव के आधार पर लिखे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस सन्दर्भ में एक तो वैदिक सन्ध्या का संकलन किया। वेद में से 17 मन्त्रों का चयन करके ऐसी विधि से पिरोया कि वांछित पुरुषार्थ का मार्ग दृष्टिमान हो जाता है और अन्त में एक समर्पण सूत्र द्वारा इस मार्ग को और भी आलोकित कर दिया। यह सूत्र है-''हे ईश्वर दयानिधे! भवत् कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणाम् सद्य: सिद्धिर्भवेन्त:'' अर्थात् ''हे प्रभु! आप तो दया की निधि हो। आपकी कृपा हो कि हमारे इस जप, उपासना के फलस्वरूप हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि शीघ्र से शीघ्र प्राप्त हो।'' तो यह है मोक्ष की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ का मार्ग। व्यक्ति सबसे पहले 'धर्म' और 'अधर्म' की पहचान करता हुआ अपने जीवन को धर्मयुक्त बनाए, फिर धर्मानुसार कर्म करता हुआ 'अर्थ' का अर्जन करे, अपने परिवार का पालन पोषण करे, दान आदि देकर सर्वहितकारी संस्थाओं का सहयोग करे, जरूरतमंद गरीबों की धन आदि से सहायता करे। इसके साथ-साथ अपने मन को नियन्त्रित रखता हुआ शुभ कामनाओं को उजागर करे जैसे आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओं के पठन-पाठन और उनको क्रियान्वित कर सफलता प्राप्त कर यश और कीर्ति की प्राप्ति करना, धर्मयुक्त मनोरंजक कार्यों में भाग लेकर दक्षता प्राप्त करते हुए प्रतिष्ठा प्राप्त करना इत्यादि। इस प्रकार शुभ कामनाओं की पूर्ति से मन की सन्तुष्टि प्राप्त होती है और आत्मा परमानन्द के मार्ग पर अग्रसर होकर शीघ्र मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

महर्षि जी का इस सन्दर्भ में दूसरा श्रेष्ठ प्रयास ''ईश्वर स्तुति, प्रार्थना उपासना'' के आठ मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना है कि हे सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सभी दुरित, दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वे हमें प्राप्त कराइए। इस प्रार्थना को ध्यान से विचारा जाए तो मन में प्रश्न उठेगा कि यह 'दुरित' क्या हैं जिन्हें दूर करने अर्थात् नष्ट करने की प्रार्थना कर रहे हैं। यह दुरित ही हमारे पाप कर्मों का फल है। जब हम यहां 'फल' शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका अभिप्राय खाने वाले 'फल' नहीं होते, अपितु फल का होता है ''प्रतिक्रिया'' जिसे अंग्रेजी भाषा में ''रीऐक्शन'' कहा जाता है। यह ईश्वर का बनाया नियम है कि "Every action has a reaction." अर्थात् हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। इसी के आधार पर विविध भाषाओं में विविध कथनियां बनी हुई हैं जैसा कि "As you sow so shall you reap" अर्थात् ''जैसा बोओगे वैसा काटोगे'' ''जैसी करनी वैसी भरनी।'' शास्त्रों में भी आया है ''अवश्यमेव भोक्तव्यं फलम् शुभाशुभम्।।'' अर्थात् शुभ कर्मों का शुभ और अशुभ कर्मों का अशुभ फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। यह एक प्रकार की मानव मात्र की चेतावनी है कि वह पाप कर्मों से बचकर रहे, कोई यह न सोचे कि कौन देख रहा है कि वह पाप कर रहा है, और यदि कोई देख भी लेगा तो क्या कर लेगा, वह अपनी सामर्थ्य और पहुंच के आधार पर अपने को आंच नहीं आने देगा। शास्त्रोक्तियां और लोकोक्तियां मानव मात्र को सावधान करती हैं कि ईश्वर की व्यवस्था ऐसी है कि कोई भी कर्म करने के उपरान्त उसकी प्रतिक्रिया से अछूता नहीं रह सकता, यदि पाप कर्म किया है तो दु:खदायक प्रतिक्रिया, यदि पुण्य कर्म किया है तो सुखदायक प्रतिक्रिया और यदि निष्काम भावना से अपना कर्त्तव्य समझते हुए कर्म किया है तो मोक्ष की ओर बढ़ता हुआ कदम। तो इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे परम पिता! हमसे हुए पापों के कारण जो दुर्गुण हमारे मन में उत्पन्न हुए हैं और हमारे अन्त:करण में संचित हुए हैं उनको नष्ट कर दो और उनके स्थान पर हमारे मन-अन्त:करण में भद्र भावनाएं, शुभ गुण, शुभ स्वभाव स्थापित कर दो ताकि हम धर्म-अधर्म को पहचानते हुए धर्म के मार्ग पर चलें।

यह शंका चिन्तकों में आम प्रचलित हैं कि ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता, यदि वह ऐसा करेगा तो उसे पक्षपाती होने का दोष लगेगा। इस बारे में हमें यह स्मरण रहना चाहिए कि ईश्वर को किसी प्रकार का दोष नहीं लगता। वेद के कथन अनुसार वह ''अपापविद्धम'' है। वह जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है। उसका कोई भी कर्म पाप नहीं होता। अब रही यह बात कि क्या वह किसी व्यक्ति के पाप क्षमा करेगा। तो हमें याद रखना चाहिए कि ईश्वर ने जीवात्मा के रास्ते में आने वाली हर समस्या के समाधान की व्यवस्था कर रखी है। जैसे वेद का उपदेश है कि भोजन वह खाओ जो तुम्हारी शारीरिक प्रकृति के अनुकूल है, उतना खाओ कि पेट में वायु-जल के लिए पर्याप्त स्थान बचा रहे, भोजन ऋतु के अनुकूल खाओ। परन्तु यदि कोई व्यक्ति इन उपदेशों का उल्लंघन करता है और फलस्वरूप पेट में पीड़ा, एसिडिटी आदि दु:ख से ग्रस्त हो जाता है, तो ईश्वर ने हींग, सत् पोदीना आदि पदार्थों का सृजन भी कर रखा है। व्यक्ति खाने-पीने से उत्पन्न व्याधि का उपचार करके दु:ख से निवृत्त हो सकता है। इस सन्दर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने 'आर्याभिविनय:' पुस्तक के द्वितीय प्रकाश: के प्रथम मन्त्र की व्याख्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना के रूप में लिखा है-''हे सर्वान्तर्यामिन्, सदुपदेशक, शुद्धिप्रद! मनसा, वाचा, कर्मणा अज्ञानेन, प्रमादेन वा यद्यत्पापं कृतं पापकरणान्निवर्त्तयतु माम।'' अर्थात् ''मन से वाणी से और कर्म से, अज्ञान व प्रमाद से जो जो पाप किया हो, कि वा करने का हो उस उस मेरे पाप को क्षमा कर, ज्ञानपूर्वक पाप करने से मुझे रोक दे जिससे मैं शुद्ध होकर आपकी सेवा में स्थिर होऊं।''

मनुस्मृति में भी एकादश अध्याय में 'प्रायश्चित' की विधि विस्तार से वर्णित है। इसके श्लोक 18 और 19 में लिखा है कि प्रायश्चितकर्त्ता को शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक गायत्री मन्त्र और पवित्र करने वाले मन्त्रों का (विश्वानि देव मन्त्र का विशेष रूप से वर्णन है) जप करना चाहिए जिससे क्रिया रूप में प्रकट हुआ पाप एवं अन्त:करण में ही भावना का रूप लिए हुए पाप दोनों प्रकार पापों से शुद्धि प्राप्त की जा सकती है। इम मन्त्रों की व्याख्या करते हुए शोधकर्त्ता महोदय ने बार-बार दोहराया है ''पाप से (पाप फल से नहीं)।'' सुधीजन स्वयं पढ़ कर विचार लेंगे कि 'पाप' एक 'कर्म' है जो हो गया सो हो गया। उस कर्म से शुद्धि अथवा छुटकारा पाने का क्या अर्थ। शुद्धि तो उससे अंकुरित फल की, अथवा यदि अन्त: करण में ही अंकुरित हैं तो उसकी भावना की ही सम्भव है। अत: मनुस्मृति में उपाय भी पाप के फल से निवृत्ति के लिए दिए गए हैं। संक्षेप से कहें तो ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना मन्त्रों के संकलन का आरम्भ ही स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ''विश्वानि देव'' वाले मन्त्र से किया है क्योंकि मानव जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को जाने अनजाने में हुए पापों से उत्पन्न दुरितों, दुष्प्रवृत्तियों, मानसिक विकृतियों से निवृत होकर धर्म अनुसार कर्म करने की मानसिकता और प्रेरणा की आवश्यकता है। हम सब जानते हैं कि स्वामी जी ने इस शुद्धिकारक मन्त्र को कितनी महत्ता दी है कि यजुर्वेद के भाष्य में प्रत्येक सूक्त की व्याख्या के आरम्भ में उन्होंने इस मन्त्र को लिखा है। अस्तु।

तो लेखाधीन प्रसंग में पहले मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की गई कि हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्त्ता, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे मन-अन्त:करण में से सभी प्रकार के दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, विकृतियों को दूर कर दीजिए, नष्ट कर दीजिए और कल्याणकारी भावनाओं, शोभनीय गुण-कर्म, स्वभाव को स्थापित कर दीजिए। इससे हम सदा धर्म के मार्ग पर चलते रहें, हमारा हर कर्म धर्मानुसार हो जिससे हम दूसरों को भी सुखी रखें और आप भी सुखी रहें। (क्रमश:)

## सम्पादकीय.....

23 जनवरी जन्मदिवस पर विशेष-

# लौह पुरूष-स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य जगत् के लौह पुरूष थे। वे वीतराग सन्यासी होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ सेनानी थे। जिन पुण्यात्माओं को जन्म देक़र यह भारत भूमि धन्य हो गई है, उन पुण्यात्माओं में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी एक थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म विक्रम सम्वत् 1934 के पौष मास की पूर्णिमा को मोही ग्राम जिला लुधियाना में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में हुआ था। बालक केहरसिंह का जन्म सन् 1877 ई. में उस समय हुआ जब महर्षि दयानन्द जी महाराज वेद ज्ञान की अमृत धारा को प्रवाहित करते हुए लुधियाना नगर पधारे। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनकर अपना जीवन अर्पण कर देगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन त्याग, तप, सरलता और संयम का प्रतीक था। उनकी करनी और कथनी में भेद नहीं था। उनका व्यक्तिगत जीवन सामान्य व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु त्यागी, तपस्वी महात्माओं के लिए भी अनुकरणीय जीवन था। वैसे भी लुधियाना को यह गौरव प्राप्त है कि इसने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय को जन्म दिया था। शास्त्रार्थ समर के अजयी योद्धा स्वामी दर्शनानन्द जी को जन्म देने का श्रेय भी इसी जिले को प्राप्त है। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य समाज के लौहपुरूष थे। इनका जन्म सिक्ख परिवार में हुआ था। स्वामी जी के जन्म के समय ऋषिवर दयानन्द जी ने वैदिक धर्म की दुन्दुभि पंजाब में बजाई थी। उस वैदिक धर्म के जयघोष का असर लुधियाना पर विशेष रूप से पडा और लुधियाना जिले ने बहुत से धार्मिक नेता, समाजिक नेता समाज को दिये। उसी कड़ी में एक बाल ब्रह्मचारी केहर सिंह अपने माता-पिता की गोद में पल रहा था।

बालक केहर सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम व ननिहाल में हुई। अपने ननिहाल में रहते हुए केहर सिंह वहां के प्रसिद्ध उदासीन साधुओं के डेरे में आते जाते थे। डेरा के महन्त पं. विशनदास की प्रेरणा से उन्होंने ने संस्कृत पढ़ी। पं. विशनदास जी महर्षि दयानन्द जी के विचारों से काफी प्रभावित थे। पं. विशनदास जी के सत्संग से केहर सिंह पर भी वैदिक धर्म का रंग चढ़ गया। इन्होंने आयुर्वेद तथा युनानी चिकित्सा का भी अध्ययन किया हुआ था। पिता जी चाहते थे कि केहर सिंह को सेना में जरनैल बनाएं परन्तु केहर सिंह ने गृहस्थी के चक्कर में प पडकर देश और धर्म की सेवा करने का दृढ निश्चय कर लिया था। इस नौजवान को किसी प्रकार कोई मोह एवं मत-मतान्तर घर में बांध न सका और भरी जवानी में जो बचपन में वैदिक धर्म का नाद कानों में पडा था उस वैदिक धर्म की रक्षा के लिए देश, जाति और धर्म की ढाल बनने के लिए आर्य समाज रूपी युद्ध में कूद पडा। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब भी जहां-जहां भी आर्य समाज में आन-बान और शान के लिए जरूरत पड़ी वहां पर स्वामी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सबसे आगे आए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज निड़रता की मूर्ति थे। उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जो उनकी वीरता को प्रस्तुत करते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने आर्य समाज के लिए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में कार्य किया। जिस प्रकार एक वीर योद्धा का लक्ष्य रणभूमि में जाकर अपने देश के लिए मर-मिटना होता है उसी प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन का लक्ष्य महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन में फैलाना था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीर थे और वीरों के वंशज थे। उन्होंने अपने जीवन काल में कई संग्रामों में भाग लिया, कई मोर्चों को चलाया और प्रत्येक मोर्चे में अपने तपोबल, दूरदर्शिता, नीतिमत्ता व त्याग के कारण विजय प्राप्त की। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आर्य समाज के लौह पुरूष थे। वे किसी भी मत, पन्थ और प्रलोभन के आगे नहीं झुके। चाहे वह लोहारू नामक रियासत की घटना हो या मालेरकोटला के नवाब से टक्कर लेना हो। वे किसी भी परिस्थितियों में किसी के आगे नहीं झुके और हमेशा विजयी रहे।

जब 1925 ई. में मथुरा में महर्षि जी की जन्म शताब्दी मनाई गई तो वहां पर पूज्य स्वामी जी ने व्याख्यान दिया और कहा कि हम कितना भी आर्य समाज के लिए कार्य करें पर महर्षि दयानन्द जी के ऋण से उऋण नहीं हो सकते । इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय लिया कि एक उपदेशक विद्यालय खोलना चाहिए। यह प्रस्ताव पारित हो गया। लाहौर में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय खुला। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज इस उपदेशक विद्यालय के दस वर्ष तक आचार्य रहे। विद्यालय से कोई भी पैसा अपने उपर खर्च नहीं करते थे और भिक्षाटन करके अपना काम चलाते थे। सन् 1938 में दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की। यह मठ आर्य समाज का केन्द्र बन गया। जब आन्ध्रप्रदेश में हैदराबाद के नबाव ने हिन्दुओं और आर्य भाईयों पर अत्याचार करना शुरू किया तो आर्यों ने सत्याग्रह शुरू किया। वहां पर कोई हिन्दु या आर्य अपने मन्दिरों में पूजापाठ या हवन यज्ञ नहीं कर सकते थे। इसलिए आर्य समाज ने सत्याग्रह शुरू कर दिया। सत्याग्रह का संचालन पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को सौंपा गया। हैदराबाद का नबाव धन और वैभव से सम्पन्न था उससे लोहा लेना कोई आसान काम नहीं था। जब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और नारायण स्वामी जी हैदराबाद में सत्याग्रह के लिए पहुंचे तो वहां के लोग कहने लगे कि आप कैसे नबाव से टक्कर ले सकते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पूर्वज उस हल्दी घांटी से आए थे जहां महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा गुंजायमान थी। जहाँ देश, धर्म और जाति के लिए परवाने शहीद हुए थे। उन्हीं पूवर्जों की भावना तथा वही खून स्वामी जी की रगों में हिलोरें ले रहा था। सचमुच स्वामी जी की मेहनत ने आर्यों के अन्दर नया उत्साह भर दिया जिससे सारा उत्तरी भारत सुदृढ और संकल्पित होकर स्वामी जी के नेतृत्व में दक्षिण दिशा को चंल दिए और पांच महीनों के अन्दर ही हैदराबाद के नबाव के घुटने टिका दिए। जहां सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर पाबन्दी थी। रामायण, गीता और उपनिषद पढ़ने वालों को देशद्रोही समझा जाता था। मन्दिरों में घंटियां बजाना महापाप था। उसी हैदराबाद में नबाव की कोठी में वैदिक धर्म के जयघोष से आकाश गुंजायमान हुआ। वहां के नबाव ने आर्य समाज के आगे घुटने टेक दिए। जब भारतवर्ष आजाद हुआ तो सारी रियासतें भारतवर्ष में मिल गई पर हैदराबाद का नबाव भारतवर्ष में मिलना नहीं चाहता था पर वहां गृहमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जाकर रातों रात नबाव के हस्ताक्षर करवाकर भारतवर्ष में मिला लिया। सरदार पटेल ने कहा था कि मैंने तो कुछ नहीं किया मेरे से पहले ही आर्य समाज ने नबाव की कमर तोड़ दी थी।

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन अत्यन्त प्रेरणाप्रद है। वे एक आदर्श साधु, दूरदर्शी, कर्मठ व त्यागी नेता थे। वे एक गम्भीर विद्वान, इतिहासवेत्ता व वीर सेनापति थे। ऐसें पूजनीय महापुरूष से उनके जन्मदिवस पर हम प्रेरणा लें। स्वामी जी के गुणों को धारण करके हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाएं। आज स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक सारे संसार को प्रेरणा देता रहेगा।

**-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

## मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया

आर्य समाज नवांशहर द्वारा डॉ. आशानन्द मॉडल सी. सै. स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में मकर संक्रान्ति का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा पंडित अमित शास्त्री पुरोहित आर्य समाजी थे। अपने उद्बोधन में उन्होंने उत्तरायण के पर्व का महत्त्व बताया। तत्पश्चात श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी को आर्य समाज व आर्य शिक्षण संस्थाओं में दिए गए योगदानों के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. आशानन्द मॉडल स्कूल के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सरीन जी ने श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज जी ने सभी को मकर संक्रान्ति की बधाई देते हुए कहा कि हमें पर्वों से प्रेरणा लेते हुए सामूहिक रूप से समाज को सुदृढ़ बनाना पड़ेगा तभी हम ऋषि के ऋण से उऋण हो पाएंगे। साथ ही उन्होंने श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल के योगदान को मील का पत्थर मान कर आगे बढ़ने का आह्वान किया। श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने कहा कि यह मेरा योगदान नहीं अपितु स्व. श्री देवेन्द्र कुमार जी की प्रेरणा व साथ का फल है जो कुछ मैं कर पाया हूं। डॉ. आशानन्द मॉडल स्कूल की प्रिंसीपल ने सभी का विद्यालय में पधारने पर धन्यवाद किया। इस अवसर पर सभी आर्यजन व शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपल व स्टॉफ मौजूद थे। **-प्रचार मन्त्री आर्य समाज नवांशहर**

# केवल एक ही पति

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्टियां, यमुनानगर

(गतांक से आगे)

धर्मराज कहाने वाले युधिष्ठिर ने यह झूठ कहा कि भीमसेन अभी अविवाहित है क्योंकि हिडिम्बा के साथ उनका विवाह हो चुका था व घटोत्कच नामक एक पुत्र भी जन्म ले चुका था। अस्तु। इस प्रस्ताव पर स्वीकृति-सहमति नहीं बनी तथा केवल युधिष्ठिर के साथ ही द्रौपदी का विवाह-संस्कार पारंगत विद्वान् मन्त्रज्ञ पुरोहित धौम्य ने सम्पन्न कराया। पूरे महाभारत में ऐसा कहीं भी लिखा नहीं मिलता कि द्रौपदी का विवाह उस समय अथवा फिर बाद में कभी शेष चार पाण्डवों में से किसी के साथ हुआ था। इसके अतिरिक्त द्रुपद का यह कथन भी हमारे विश्वास को सार्थक करता है-

**लोक वेद विरुद्धं त्वं ना धर्म धर्म विच्छुचिः।**

**कर्तुमर्हसि कौन्तेय कस्मात् ते बुद्धिरीदृशी।।**

**-आदि पर्व, अध्याय 194, श्लोक 28**

**अर्थ**-तुम धर्म के ज्ञाता एवं पवित्र हो। अतः तुम्हें लोक व वेद विरुद्ध यह अधर्म नहीं करना चाहिए। कुन्ती पुत्र! तुम्हारी बुद्धि ऐसी क्यों हो रही है ?''

धृष्टद्युम्न व व्यास जी ने भी युधिष्ठिर के प्रस्ताव का तार्किक व शास्त्रीय आधार पर (आदि पर्व, अध्याय 195, श्लोक 7 से 12 तक) विरोध किया तथा अन्ततः युधिष्ठिर से ही द्रौपदी का विवाह हुआ।

हमारे विचार में महाभारत के सभी पात्रों में कृष्ण जी सर्वाधिक तेजस्वी पुरुष हैं जो सदा धर्म के रक्षक व पोषक रहे। दूसरे नम्बर पर द्रौपदी का नाम है। वह साक्षात् अग्नि है, ज्वालामुखी है। चीर हरण के अवसर पर जब उसका घोर अपमान किया गया तो क्या वह मौन रही भरी सभा में इधर-उधर देखकर किसी को भी अपना सहायक न पा सकी व लज्जित बैठे अपने पति युधिष्ठिर व चार देवरों को सिर झुका कर देख रही थी तो गर्जकर उस तेजस्विनी आर्या ने यह प्रश्न पूछा था कि मेरे पति ने पहले किसे हारा था ? क्या साधारण नारी वैसा पूछ सकती है? ऐसे साहसी, अपने अधिकार की जानकार व स्वाभिमानिनी द्रौपदी क्या भेड़-बकरी थी जो मौन-जड़वत देखती रही ? क्या वह वेश्या थी जो पांच पुरुषों को अपना पति बनते देखखर भी निष्क्रिय बैठी रही ? वह राजकुमारी थी, वेदना थी। अपने वर को चुनने अर्थात् किसी को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार उसे था। व्यास, धृष्टद्युम्न, द्रुपद, द्यौम्य व कृष्ण जैसे सदपुरुष उसके साथ थे। क्या दबाव डालकर पांच पुरुषों से ऐसी नारी को ब्याह दिया जा सकता था ? उसके पिता ने भी स्पष्टतः युधिष्ठिर के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था एवं द्यौम्य पुरोहित ने युधिष्ठिर से ही द्रौपदी का पाणि ग्रहण संस्कार किया-

**ततः समाधाय स वेदपारगो जुहाव मन्त्रैर्ज्वलितं हुताशनम्।**

**युधिष्ठिरं चाप्युपनीय मन्त्रविद नियोजयामास सहैव कृष्णाया।।**

**-आदि पर्व, 197 अध्याय, श्लोक।**

**अर्थ**-''द्रुपद के यह कहने पर कि आप (युधिष्ठिर) अपने अथवा भाईयों में से जिसके साथ चाहें, उसी के साथ द्रौपदी के विवाह की आज्ञा दें, वेदों के पारंगत विद्वान, पुरोहित धौम्य ने वेदी पर प्रज्वलित अग्नि की स्थापना करके उसमें मन्त्रों द्वारा आहुतियां दिलाईं और युधिष्ठिर से द्रौपदी का गठबन्धन कर दिया।''

इस ठोस प्रमाण के होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति द्रौपदी के पांच पति होने की रट लगाता है तो यह उसका हठ ही है।

विवाहोपरान्त के भी कई प्रमाण महाभारत में उपलब्ध हैं। कुछ प्रमाण ये हैं-

**यथेन्द्राणी हरिहये स्वाहा चैव विभावसौ।**

**रोहिणी च यथा सोमे दमयन्ती यथा नले।।**

**यथा वैश्रवणे भद्रा वसिष्ठे चाप्युरुन्धती।**

**यथा नारायणे लक्ष्मीस्तथात्वं भव भर्तरि।।**

**-आ. पर्व. 198वां अध्याय, 5-6 श्लोक**

**अर्थ**-कुन्ती ने आशीर्वाद देते हुए कहा-''जैसे इन्द्राणी इन्द्र में, स्वाहा अग्नि में, रोहिणी चन्द्रमा में, दमयन्ती नल में, भद्रा कुबेर में, अरुन्धती वसिष्ठ में तथा लक्ष्मी नारायण में भक्ति भाव एवं प्रेम रखती थीं उसी प्रकार तुम भी अपने पति में अनुरक्त रहो।'' क्या उपरोक्त पत्नियों के एक से अधिक पति थे जिनको अपना आदर्श बनाने का उपदेश कुन्ती ने द्रौपदी को दिया ? यदि कुन्ती के ''आदेशानुसार'' द्रौपदी पांच भाईयों में बांट ली गई थी तो कुन्ती ने द्रौपदी को एक ही पति में अनुरक्त रहने का आदेश क्यों दिया ? अज्ञातवास का एक वर्ष का काल राजा विराट के यहां पाण्डवों व द्रौपदी ने व्यतीत किया था। विराट के साले कीचक की द्रौपदी पर बुरी दृष्टि थी। सहायता के लिए द्रौपदी जब भीमं के पास गई तो बोली-

**अशोच्यत्वं कुतस्तस्या यस्या भर्ता युधिष्ठिरः।**

**जानन् सर्वाणि दुःखानि किं मां त्वा परिष्टच्छसि।।**

**-विराट पर्व, अध्याय 18, श्लोक**

**अर्थ**-''हे वीर! जिस स्त्री का पति राजा युधिष्ठिर हो, उसे शोक नहीं, यह कैसे हो सकता है ? मेरे सारे दुःखों को जानते हुए भी मुझसे क्या पूछते हो ?'' यहां द्रौपदी ने स्वयं की युधिष्ठिर की पत्नी कहा है। भीम को यह नहीं कहा कि तुम मेरे पति हो या अर्जुन, नकुल अथवा सहदेव की भी मैं पत्नी हूं।

कीचक की हत्या करते समय भीम इस प्रकार बोला-

**अद्याहमनृणो भूत्वा भ्रातुर्भार्या -पहारिणम्।**

**शान्तिं लब्धास्मि परमां हत्वा सैरन्धिकण्टकम्।। -विराट पर्व**

**अर्थ**-''अपने बड़े भाई की पत्नी का अपहरण करने वाले, सैरन्ध्री (द्रौपदी) के लिए कण्टकरूप दुष्ट कीचक को मारकर आज मैं उऋण हो जाऊंगा और मुझे अत्याधिक शान्ति प्राप्त होगी।'' यहां भी भीम ने द्रौपदी को अपने बड़े भाई की पत्नी ही माना, न कि अपनी पत्नी कहा। पाण्डवों के दूत बनकर कृष्ण जी दुर्योधन एण्ड कम्पनी को शान्तिपूर्वक राज्य का विभाजन कर लेने व युद्ध रोकने के लिए सभा में दुर्योधन को समझा रहे थे तो दुर्योधन ने कहा कि मैंने पाण्डवों के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया। उत्तर में कृष्ण जी ने दुर्योधन के कई दुष्ट कार्यों का वर्णन करते हुए यह भी कहा-

**कश्चान्यो भ्रातृभार्यां वै विप्रप्रकर्तु तथार्हति।**

**आनीय च समां व्यक्तं यथोक्ता द्रौपदी त्वया।।**

**अर्थ**-''तेरे अतिरिक्त कौन ऐसा नीच होगा, जो अपने बड़े भाई की पत्नी को सभा में लाकर उसके साथ वैसा अभद्र व्यवहार करेगा, जैसा कि तुमने द्रौपदी के साथ स्पष्ट रूप से न कहने योग्य बातें कहकर किया था ?'' कृष्ण जी के इस कथन में भी द्रौपदी को युधिष्ठिर की ही पत्नी माना गया है क्योंकि युधिष्ठिर ही दुर्योधन का (चचेरा) बड़ा भाई था। शेष चार भाई तो दुर्योधन से छोटे ही थे।

जुए में युधिष्ठिर हार गया तो दुःशासन द्रौपदी को महलों से भरी सभा में लाने गया। तब आर्तनाद करती हुई अबला सी द्रौपदी उसी ओर भागी, जहां धृतराष्ट्र की स्त्रियां बैठी थीं। तब-

**ततो जवेनाभिससार रोषाद् दुःशासनस्तामभिगर्जमानः।**

**दीर्घेषुनीलष्वथ चोमिमृत्सु जग्राह के शेष, नरेन्द्र पत्नीय।।**

**-सभा पर्व**

**अर्थ**-''दुःशासन भी रोष से गर्जता हुआ बड़े वेग से उसके पीछे दौड़ा। उसने महाराज युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी के लम्बे, नीले तथा लहराते हुए केशों को पकड़ लिया।'' श्लोक में ''नरेन्द्र'' का अर्थ युधिष्ठिर ही है। यहां भी द्रौपदी को युधिष्ठिर की ही पत्नी कहा गया है।

एक प्रमाण यह भी है कि युधिष्ठिर ने ही द्रौपदी को जुए में दांव पर लगाया क्योंकि द्रौपदी केवल युधिष्ठिर की ही पत्नी थी। यदि वह शेष चार भाइयों की भी पत्नी होती तो युधिष्ठिर ने दांव खेलने से पूर्व उनसे भी पूछा होता। जब ऐसा नहीं किया गया तो इससे भी सिद्ध है कि केवल युधिष्ठिर ही द्रौपदी का पति था।

सबसे बड़ा प्रमाण धौम्य पुरोहित द्वारा केवल युधिष्ठिर से ही द्रौपदी का विवाह संस्कार करने का है तथा पूरी महाभारत में कहीं किसी अन्य पाण्डव से विवाह-संस्कार कराने का वर्णन नहीं है। लेख ''एक यां पांच'' के लेखक श्री अभिमन्यु कुमार ने अपने लेख में कुछ ऐसे प्रश्न भी उठाए हैं जिनका सीधा सम्बन्ध द्रौपदी से नहीं है। हम अब अपनी मति के अनुसार उनके विषय में भी चर्चा करने का लघु प्रयत्न कर रहे हैं-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# ब्रह्मचर्य का स्वरूप व उसके पालन से लाभ

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

सभी मनुष्य सुख की ही कामना करते हैं, दुःख की कामना कोई मनुष्य नहीं करता। सुख प्राप्त हों और जीवन में दुःख न आएं, इसके लिए प्रयत्न करना होता है। सुख व दुःख का आधार शरीर है। यदि हमारा शरीर दुर्बल व रोगी है तो यह दुःख का धाम बन जाता है और यदि यह बलवान व निरोग है तो यह सुख का आधार होता है। दुर्बलता और रोगों से रक्षा के लिए ब्रह्मचर्य एक ऐसा उपाय व साधन है जिसे धारण करने से मनुष्य दुःखों से बच सकता है और सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है। ब्रह्मचर्य क्या है ? यह शरीरस्थ सभी इन्द्रियों यथा दर्शन, श्रवण, गन्ध, रस व स्पर्श पर पूर्ण नियन्त्रण को कहते हैं। यदि हमारी कर्म इन्द्रियों के यह पांचों अवयव पूर्णतया पवित्र हों, इनमें किंचित मलिनता व विकार न हों, तो यही ब्रह्मचर्य व इसका पालन है। जो मनुष्य अदर्शनीय वस्तुओं का दर्शन, अश्रवणीय कथाओं का श्रवण, विपरीत व हानिकारक गन्ध, रस व स्पर्श का सेवन करता है तो उसका ब्रह्मचर्य खण्डित हो जाता है या यह बातें ब्रह्मचर्य को कुप्रभावित व खण्डित करती हैं। हम भोजन के रूप में जो कुछ ग्रहण करते हैं उससे शरीर में भिन्न-भिन्न पदार्थ व धातुएं बनती हैं जिनसे शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है। ऐसी ही धातुओं में से पुरुष शरीर में एक धातु वीर्य होती है। इसका शरीर में अधिक मात्रा व उत्कृष्ट अवस्था में होना शरीर व प्राणों के बल, आरोग्यता व बौद्धिक व आत्मिक उन्नति का कारण व साधन होता है। और इसका नाश व अपव्यय ही ब्रह्मचर्य का नाश व खण्डन होता है जो कि पंचकर्मेन्द्रियों की पवित्रता व नियन्त्रण न होने के कारण उत्पन्न होता है। हमारी सभी इन्द्रियां मन की प्रेरणा से इच्छित विषयों में आकर्षित होती हैं। यदि मनुष्य को सत्य-असत्य व उचित-अनुचित का ज्ञान है और मन में असत्य व अनुचित कार्यों को न करने का दृढ़ संकल्प है तो मन इंन्द्रियों के अपवित्र व हानिकारक कार्यों से बच जाता है और सुख का लाभ करता है। इस ब्रह्मचर्य की रक्षा व पालन के लिए मनुष्य को वायुसेवन, प्रभातवेला में भ्रमण सहित आसन, प्राणायाम व ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना भी आवश्यक होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में आयु के अनुसार ब्रह्मचर्य के तीन प्रकार लिखे हैं जिनके नाम हैं कनिष्ठ ब्रह्मचर्य, मध्यम ब्रह्मचर्य और उत्तम ब्रह्मचर्य। आज इस लेख में हम इन तीनों प्रकार के ब्रह्मचर्य का पाठकों के लाभार्थ इस हेतु से वर्णन कर रहे हैं कि वह इस जान व समझ कर स्वयं लाभान्वित हों व इसका प्रचार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

ब्रह्मचर्य का मुख्य प्रयोजन न केवल शरीर व प्राणों को बलवान बनाना है अपितु इसका मुख्य प्रयोजन वेदादि शास्त्रों के ज्ञान व विज्ञान सहित समस्त विद्याओं का अर्जन भी है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में शास्त्रों के आधार पर लिखा है कि पांचवें व आठवें वर्ष से लड़के, लड़कों की पाठशाला तथा लड़कियां, लड़कियों की पाठशालाओं में जाएं और नियमपूर्वक अध्ययन का आरम्भ करें। आठवें वर्ष से आगे छत्तीसवें वर्ष पर्यन्त अर्थात् एक-एक वेद के सांगोपांग पढ़ने के बारह-बारह वर्ष मिल कर छत्तीस और आठ मिलकर चवालीस अथवा अठारह वर्षों का ब्रह्मचर्य और आठ पूर्व के मिल के छब्बीस व नौ वर्ष तथा जब तक विद्या पूरी ग्रहण न कर लेवे तब तक ब्रह्मचर्य रखे। छान्दोग्य उपनिषद के आधार पर ब्रह्मचर्य का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है। प्रथम कनिष्ठ जो पुरुष अन्न-रस-मय देह और देह में शयन करने वाला जीवात्मा, यज्ञ द्वारा अतीव शुभगुणों से संगत और सत्कर्तव्य है, इसको यह कर्त्तव्य अवश्य है कि 24 वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रिय अर्थात् ब्रह्मचारी रहकर वेदादि विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करे और विवाह करके भी लम्पटता न करें तो उसके शरीर में प्राण बलवान् होकर सब शुभ गुणों के वास कराने वाले होते हैं। इस प्रथम वय में जो अपना सारा समय विद्याभ्यास में तपस्या करता हुआ लगाए और वह आचार्य ब्रह्मचारी को वैसा ही उपदेश किया करे और ब्रह्मचारी ऐसा निश्चय रखे कि जो मैं प्रथम अवस्था में ठीक-ठीक ब्रह्मचर्यपूर्वक रहूंगा तो मेरा शरीर और आत्मा आरोग्य बलवान् होकर मेरे प्राण शुभगुणों को बसाने वाले होंगे। महर्षि दयानन्द गृहस्थियों को कहते हैं कि तुम इस प्रकार से अपने निजी भौतिक सुखों का विस्तार करो कि जिससे ब्रह्मचारी व विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का लोप न करें अर्थात् वह भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर आकर्षित व कुप्रभावित न हों और वह 24 वर्ष तक तो ब्रह्मचर्य का पालन कर सकें। आचार्य ब्रह्मचारी को उपदेश करते हुए विश्वास दिलाता है कि यदि तू 24 वर्ष के पश्चात् गृहाश्रम करेगा तो प्रसिद्ध है कि रोगरहित रहेगा और तेरी आयु भी 70 व 80 वर्ष होगी। दूसरा ब्रह्मचर्य मध्यम ब्रह्मचर्य कहलाता है जो मनुष्य 44 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर वेदाभ्यास करता है। उसके प्राण, इन्द्रियां, अन्तःकरण और आत्मा बलयुक्त होकर सब दुष्टों को रुलाने और श्रेष्ठों का पालन करने वाले होते हैं। यदि कोई ब्रह्मचारी प्रथम वय में जैसा स्वामी जी ने कहा है, कुछ तपचर्या करे तो उसका यह रूद्ररूप प्राणयुक्त मध्यम ब्रह्मचर्य सिद्ध होगा। स्वामी जी कहते हैं कि हे ब्रह्मचारी लोगो! तुम इस ब्रह्मचर्य को बढ़ाओ। जैसे इस ब्रह्मचर्य का लोप न करके ब्रह्मचारी यज्ञस्वरूप होता है, वह उसी आचार्यकुल से आता और रोगरहित होता है और जैसा यह ब्रह्मचारी अच्छा काम करता है वैसा अन्य सभी को करना चाहिए।

उत्तम ब्रह्मचर्य 48 वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है। जैसे 48 अक्षर का जगती छन्द होता है, वैसे ही जो 48 वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं का ग्रहण करते हैं। आचार्य और माता-पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय में विद्या और गुणग्रहण के लिए तपस्वी कर और उन्हें तपस्वी होने का उपदेश करें और वे सन्तान आप ही आप अखंडित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावे वैसे अन्य भी बढ़ाएं क्योंकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर इसका लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

स्वामी दयानन्द जी ने ब्रह्मचर्य की उपर्युक्त तीन अवस्थाओं का वर्णन करने के बाद शरीर की अवस्थाओं का वर्णन करते हुए सुश्रुत के आधार पर बताया है कि इस शरीर की चार अवस्थाएं हैं। एक (वृद्धि) जो 16वें वर्ष से लेकर 25वें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की वृद्धि होती है। दूसरा (यौवन) जो 25वें वर्ष के अन्त और 26वें वर्ष के आदि में युवावस्था का आरम्भ होता है। तीसरी (सम्पूर्णता) जो पच्चीसवें वर्ष से लेकर चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टि होती है। चौथी (किंचित्परिहाणि) तब सब सांगोपांग शरीरस्थ सकल धातु पुष्ट होकर पूर्णता को प्राप्त होते हैं। तदनन्तर जो धातु बढ़ता है वह शरीर में नहीं रहता। किन्तु स्वप्न, प्रस्वेदादि द्वारा बाहर निकल जाता है। यहीं 40वां वर्ष विवाह का उत्तम समय है। अड़तालीसवें वर्ष में विवाह महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य युक्त जीवन, उसकी महत्ता व लाभों पर विचार सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में व्यक्त किए हैं। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कराने वाला ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन वैदिक आश्रम व्यवस्था के अनुसार जीवन की श्रेष्ठतम व्यवस्था है। इससे विद्या की प्राप्ति, शारीरिक व प्राण शक्ति को बल की प्राप्ति सहित सुखी व रोगरहित दीर्घायु की प्राप्ति होती है। इतिहास में रामभक्त वीर हनुमान और भीष्म पितामह का नाम ब्रह्मचर्य के व्रत पालन के कारण अमर है। इसके बाद अखण्ड ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द ही हुए हैं जिन्होंने ब्रह्मचर्य के सेवन से प्रशंसनीय शारीरिक व आत्मिक उन्नति प्राप्त की और देश व संसार का अपूर्व उपकार किया। उन्होंने जिस वैदिक विचारधारा को अपने उपदेशों, लेखों व ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, वही विचारधारा समाज, देश व विश्व में सुख व शान्ति का आधार है। उनके बताए मार्ग पर चल कर ही मनुष्य अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति कर सकते हैं। इन्हें प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। उनका बताया वैदिक मार्ग सनातन व शाश्वत होने के साथ देश व काल से अबाधित व अप्रभावित है। सभी मनुष्यों को उनके विचारों व वैदिक व्यवस्थाओं को जीवन में धारण कर अपना जीवन सफल करना चाहिए।

# प्रेरक व्यक्तित्व-मान्य श्रद्धेय डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा

*-ले० पं. जगदीश चन्द्र वसु वेदोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा पानीपत*

हमारे इस पुरातन आर्यावर्त देश में समय-समय पर ऐसे अनेक दिव्य आर्य पुरुष जन्म लेते रहे हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश, जाति, समाज एवं धर्म संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा एवं संवर्द्धन के प्रचार-प्रसार में पूर्ण योगदान दिया है। उन्हीं में एक हैं-मोहल्ला गोबिन्दगढ़, जालन्धर नगर, पंजाब निवासी प्रसिद्ध आर्य मनीषी, वयोवृद्ध स्वनामधन्य मान्य श्रद्धेय श्री डा. इन्द्रकुमार शर्मा जी जो अपनी उत्कट देशभक्ति, समाज सेवा, आध्यात्मिक पवित्र पुरातन परम्पराओं के प्रति अगाध श्रद्धा, अपूर्व अनुभव, सरलता, सादगी, गम्भीर विचार महान व्यक्तित्व के गुणों से युक्त हैं।

आपके पूज्य दादा स्व. श्री पंडित रामलाल जी शर्मा थे। वे 1896 ई. में लाहौर पढ़ने गए थे। वहां पर आर्य समाज का बड़ा प्रचार था। इस कारण वे आर्य समाज के प्रभाव में आकर आर्य बन गए थे। इस कारण घरवालों ने उन्हें विधर्मी होने के कारण जायदाद से बेदखल कर दिया। वह पंजाब सरकार के सिंचाई विभाग में पटवारी के पद पर लगे थे। बाद में पदोन्नति होती रही। अपनी सारी आयु आर्य समाज से जुड़े रहे। सन् 1942 में मृत्यु तक लायलपुर (फैसलाबाद) पाकिस्तान में रहे। कभी अपने गांव जंडियाला मंज़की जिला जालन्धर वापिस नहीं आए। शर्मा जी के पूज्य पिता श्री अमरनाथ शर्मा जी भी पंजाब सरकार के सिंचाई विभाग में कार्यरत रहे। वे भी आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे। भिन्न-भिन्न स्थानों पर आर्य समाज के मन्त्री पद पर रहे। वे लायलपुर, लाहौर, अमृतसर, जालन्धर, यमुनानगर से 1958 में सेवामुक्त हुए। 2 फरवरी 1959 में उनका देहान्त जालन्धर नगर में हुआ। घर पर प्रतिदिन सायंकाल में नियमित रूप से हवन हुआ करता था। श्री इन्द्र कुमार शर्मा जी का जन्म 26.10.1932 में हुआ है। श्री इन्द्र कुमार शर्मा 10वीं पास करने के पश्चात 1952 में दिल्ली अपने बड़े भाई साहब श्री रत्न कुमार शर्मा जी प्रिंसीपल गुजरांवाला गुरुकुल स्कूल के पास चले गए। उन दिनों भाखड़ा बांध का डिजाइन कार्यालय नई दिल्ली में था। उसमें नौकरी करने लग गए थे। नई दिल्ली सरोजिनी नगर पूर्व (विनय नगर) वाई ब्लॉक में भाखड़ा के सरकारी आवास में रहने लग गए। वाई ब्लॉक में आर्य समाज के लिए 500 गज का प्लाट सरकार की ओर से मिला था। **प्लॉट की रजिस्ट्री के लिए 7500 रुपए चाहिए थे।** श्री इन्द्र कुमार शर्मा ने प्रधान श्री भीष्म प्रताप भास्कर एवं मन्त्री श्री गंगा देव जी शर्मा को साथ लेकर अपने कार्यालय से **दो दिन में 12500 रुपए इकट्ठे** करवा दिए। इस प्रकार सरोजिनी नगर आर्य समाज की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम कर दी गई। इस प्रकार श्री भास्कर जी एवं श्री गंगादेव शर्मा ने श्री इन्द्र कुमार शर्मा को अपने साथ आर्य समाज के कार्यों में लगा दिया। दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव रामलीला मैदान में दिल्ली की आर्य समाजें सम्मिलित रूप से मनाती थी। इसी प्रकार अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सभी आर्य समाजें सम्मिलित रूप से मनाती थीं। इस कार्य को दिल्ली की आर्य केन्द्रीय सभी करती है। श्री भास्कर जी, श्री गंगादेव शर्मा जी, श्री इन्द्र कुमार शर्मा जी को सक्रिय रूप से अपने साथ उपमन्त्री के रूप में ले जाते थे। यह सब कार्य श्री राम नाथ सहगल जी महामन्त्री केन्द्रीय सभा के मार्गदर्शन में होता था।

दिल्ली में वेद प्रचार के लिए 4 उप सभा बनाई गई थी जिसमें दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा लाजपतनगर नई दिल्ली में बनाई गई थी। इस सभा के प्रधान श्री प्राणनाथ घई जी थे। उनके साथ मिलकर वेद प्रचार का कार्य करते रहे। श्रीमान् भास्कर जी एवं श्री गंगादेव शर्मा जी के साथ सार्वदेशिक सभा की बैठकों में भी भाग लेते रहे। **सन् 1952 से लेकर सन् 1969 तक लगभग 17 वर्ष** तक सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाए गए महा सम्मेलनों, सत्याग्रह, हर प्रकार के आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। सबसे आखिर में अक्तूबर मास में स्वामी सत्यानन्द पूर्व नाम आचार्य रामदेव जी द्वारा दीवान हाल आर्य समाज दिल्ली में किए गए अनशन में लगातार 10 दिन तक भाग लिया। 1.11.1968 को हरियाणा प्रान्त बना तब स्वामी जी ने दीवान हाल आर्य समाज में अनशन समाप्त किया। अनशन समाप्ति के बाद स्वामी सत्यानन्द जी को साथ लेकर जालन्धर दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला पहुंचे थे। **सन् 1969 से 1993 तक लगभग 25 वर्ष** तक आर्य समाज नंगल टाऊनशिप पंजाब में भिन्न-भिन्न पदों पर कार्य करते रहे। पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रचार मन्त्री, **सन् 1973 से 1976 तक मन्त्री पद पर रहे। फिर 1989 से 1993 तक** आर्य समाज नंगल टाऊनशिप के मन्त्री पद पर रहे। इस काल में आर्य समाज नया नंगल, आर्य समाज ऊना, वैदिक साधु आश्रम रोपड़ के साथ कार्यों में सम्मिलित होते रहे।

सेवानिवृत्ति के बाद जालन्धर नगर में **आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ की आर्य समाज** में लगातार कार्य करते रहे। आर्य समाज के वरिष्ठ उपप्रधान **1993 से 2000 तक**, प्रधान पद पर **वर्ष 2000 से 2005 तक रहे। फिर दोबारा 2007 से 2012 तक** प्रधान पद पर रहे। इस काल में इस जर्जर आर्य समाज के भवन का पुनरुद्धार किया। विदेशों से धन मंगवा-मंगवा कर आर्य समाज के भवन निर्माण का कार्य किया। जून 2012 में स्वेच्छापूर्वक त्यागपत्र दे दिया। वर्तमान में आर्य समाज के संरक्षक हैं। **आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सभा में सन् 1991 से वर्ष 2000 तक अन्तरंग सदस्य रहे।** श्री इन्द्र कुमार शर्मा जी जिन संस्थाओं के साथ जुड़े हुए हैं-

1. श्री स्व. स्वामी आनन्दवेश जी द्वारा संचालित गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल मुजफ्फर-नगर उत्तरप्रदेश से 1970 से सम्बन्धित।

2. स्व. स्वामी वेदानन्द जी द्वारा संचालित वैदिक साधु आश्रम रोपड़ से सन् 1970 में जुड़े हैं।

3. स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश से सन् 2000 से आज तक सम्बन्धित है।

4. महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला जालन्धर से जुड़े हैं।

5. श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट गुरुकुल करतारपुर ज़िला जालन्धर के सन् 2000 से ट्रस्टी हैं और अन्तरंग सभा के सदस्य हैं।

शिक्षा-इन्टरमीडिएट उत्तर प्रदेश इलाहाबाद बोर्ड से उत्तीर्ण की थी।

डिप्लोमा इंजीनियर सिविल ड्राफ्टमैन दिल्ली से।

आयुर्वेदाचार्य पत्राचार द्वारा उत्तर प्रदेश से।

योग्यता-सत्यार्थ प्रकाश की सार्वदेशिक सभा द्वारा ली गई सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं।

बाईबल की पत्राचार परीक्षा बैंगलोर से उत्तीर्ण की हैं।

आपने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर समाज एवं राष्ट्र निर्माण में पूरा-पूरा सहयोग दिया। आपकी सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। इनकी आयु इस समय 83 वर्ष है।

## शोक संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री योगेश सूद जी के पिता श्री सुरेन्द्र नाथ सूद का दिनांक 9 जनवरी 2016 को मोरिण्ड़ा में देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 10 जनवरी को पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री सुरेन्द्र नाथ सूद जी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आर्य समाज के कार्यों में हमेशा बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन दिनांक 12 जनवरी को किया गया जिसमें शहर के गणमान्य लोगों ने उन्हें अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति व धैर्य प्रदान करें।

**-प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन

22.12.2015 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में आर्य समाज एवं समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं बरनाला द्वारा श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े श्रद्धापूर्वक ढंग से मनाया गया। सर्वप्रथम ईश स्तुति में यज्ञ का योगदान किया गया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. नीलम शर्मा, प्रबन्धक समिति के प्रधान डा. सूर्यकांत शोरी, महासचिव श्री भारत भूषण मैनन, कॉलजिएट स्कूल प्रधानाचार्य श्रीमती रंजना मैनन, आर्य समाज के सदस्यों, स्टॉफ छात्राओं ने यज्ञ समिधा डाली।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान श्रद्धेय स्वामी सूर्यदेव जी महाराज ने वैदिक संस्कृति के महत्त्व विषय पर अपना प्रवचन दिया जिसमें उन्होने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने अत्यन्त रोचक शैली में विद्यार्थियों को वैदिक संस्कृति के वरण का सन्देश दिया तथा नैतिक मूल्यों को आत्मसात् करने की बात कही। उनके प्रवचन से पूर्व कॉलेज प्रबन्धक समिति एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों ने स्वामी सूर्यदेव जी का अभिनन्दन किया। कालेज प्रबन्धन समिति के महासचिव श्री भारत भूषण मैनन ने स्वामी सूर्यदेव जी महाराज द्वारा किए जा रहे समाज सेवा संबंधी कार्यों की जानकारी देते हुए उनके व्यक्तित्व से परिचित करवाया।

कालेज प्रबन्धक समिति के महासचिव एवं समाज सेवी श्री भारत भूषण मैनन को ज़िला बार एसोसिएशन के प्रधान चुने जाने पर कॉलेज की ओर से सम्मानित किया गया। कॉलेज प्राचार्या डा. नीलम शर्मा ने मैडम अनीता सिंघल, श्री कृष्ण के साथ श्री मेनन एवं उनकी धर्मपत्नी कॉलजिएट स्कूल प्रधानाचार्या श्रीमती रंजना मेनन को सम्मानित किया।

इसी अवसर पर कॉलेज छात्रा कु. दलजीत कौर को गणतंत्र दिवस परेड के लिए चुने जाने पर तथा कॉलेज की पूर्व छात्रा कु. चेतना सिंगला को भी अल्पदृष्टि श्रेणी में अति कुशल कर्मचारो के तौर पर राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया।

श्री बसंत शोरी ने भी आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाने का संदेश देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के विशेष व्यक्तियों पर प्रकाश डाला।

कालेज प्रबन्धक समिति के प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी ने समारोह में उपस्थित जनसमूह एवं श्रद्धेय स्वामी सूर्यदेव जी महाराज के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कॉलेज प्रबन्धक समिति के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री केवल जिंदल, श्री प्रदीप गोयल, श्री महेन्द्रू खन्ना, श्री शशि चोपड़ा, बरनाला नगरपालिका के प्रधान श्री संजीव शोरी, श्री पी. डी. गोयल प्रधान डी. ए. वी. कॉलेज, पैट्रन आर्य समाज बठिण्डा, श्री नरेश बत्ता, श्री रामशरण, डा. एच. कौल, श्री रामकुमार सोबती, श्री सी. मारकण्डा, श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा तथा नगर के अन्य गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

समारोह के अन्त में कालेज की ओर से ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। मंच संचालन हिन्दी प्रवक्ता डॉ. सुशील बाला ने प्रभावशाली ढंग से किया।

**-डॉ. सुशील बाला**

## राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द में 23 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 2015 को राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर का आयजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त किए।

शिविरार्थियों को बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने के लिए संस्कृत विद्यामण्डलम् के अध्यक्ष डा. गणेश कौशिक, सचिव सुरेश शर्मा, अपेक्स बैंक के अध्यक्ष व भारतीय जनता पार्टी के नेता अशोक बजाज, मुख्यमन्त्री छ. ग. शासन के निजी सलाहकार डा. अशोक चतुर्वेदी, रायपुर एम्स के डीन डा. सूर्यप्रकाश धनेरिया, गुजरात से पधारे स्वामी शान्तानन्द जी महाराजा आदि अनेक गणमान्य विद्वानों एवं स्थानीय नेतागण उपस्थित रहे।

इस पंच दिवसीय शिविर में युवाओं को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्तर पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कपिल देव शास्त्री, मुकेश शास्त्री, दु:खनाशन आर्य आदि अनेक व्यायाम शिक्षकों ने कूम्फू कराटे, योगासन आदि के प्रशिक्षण द्वारा आत्मरक्षा के गुर सिखाए। इस शिविर के साथ-साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की भी पूर्णाहुति 28 दिसम्बर को की गई। इस सम्पूर्ण सम्मेलन का आयोजन के प्रेरणास्रोत धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ इस आयोजन को सुव्यवस्थित सम्पन्न किया।

पृष्ठ 4 का शेष-एक ही पति.....

महाभारत का समय धर्म का वास्तविक स्वरूप खो चुका था। ब्राह्मण स्वार्थी व दब्बू बन गए थे। क्षत्रिय निरंकुश व अन्यायी बनकर कर्त्तव्य से च्युत हो चुके थे। अम्बा, अम्बिका तथा अम्बालिका ही नहीं, गान्धारी, सत्यवती, कुन्ती, द्रौपदी के साथ जब अन्याय हुआ तो साधारण नारियों के साथ क्या हुआ होगा, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं। इसके लिए मुख्य रूप में भीष्म पितामह, युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, दुर्योधन व द्रोणाचार्य आदि उत्तरदायी थे। आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी के अनुसार ''महाभारत वैदिक काल की सन्ध्या है। सूर्य के अस्त होने पर रात के आने से पूर्व जो दशा होती है, वह महाभारत की थी।'' श्री अभिमन्यु कुमार ने जो टिप्पणियां दी हैं, उनसे हम सहमत हैं परन्तु उनसे यह निवेदन है कि पूर्वोक्त तर्कों व प्रमाणों पर पूर्वग्रह से मुक्त होकर विचार करें तथा कुछ मिलावट वाली छोटी-छोटी बातों के आधार पर खींचतान न करें। वाममार्गियों ने मूल ग्रंथ में जो प्रक्षेप किया, उस पर मनन व चिन्तन करें। अर्जुन ने स्वयंवर जीता, इस कारण द्रौपदी 90 प्रतिशत उसकी पत्नी बन गई, यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता। परिवार में बड़े भाई का विवाह न हुआ हो और छोटे भाई का विवाह पहले कर दिया जाए। यह वैदिक परम्परा नहीं है। द्रुपद ने यह भी सोचा होगा कि परिवार में बड़ा भाई ही राजा बनेगा। अत: युधिष्ठिर से ही अपनी पुत्रों का विवाह संस्कार करा दिया।

द्रौपदी के पांच पुत्र थे, यह भी तथ्य विरुद्ध बात प्रचारित हो गई है। द्रौपदी जब जुए में हार गई थी तो भरी सभा में उसे लाया गया। वहां भीम के हुंकार भरे शब्दों से भयभीत धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को वर मांगने को कहा तो द्रौपदी ने कहा-

**ददासि चेद् वरं महयम् वृणोमि भरतर्षभ।**

**सर्वधर्मानुग: श्रीमानदासोस्तु युधिष्ठिर:।**

**मनस्विनमजानन्तां मैवं ब्रूय: कुमारक:।**

**एष वै दास पुत्रा हि प्रतिन्ध्यं ममात्मजम्।।**

-सभा पर्व, श्लोक 28 व 29वां

**अर्थ**-''यदि आप मुझे वर देते हैं तो मैं यह वर मांगती हूं कि सम्पूर्ण धर्म का आचरण करने वाले राजा युधिष्ठिर दास भाव से मुक्त हो जाएं। जिससे मेरे मनस्वी पुत्र प्रतिविन्ध्य को दूसरे राजकुमार अज्ञानवश दास पुत्र कहकर न प्रकार सकें।'' इससे स्पष्ट है कि द्रौपदी का एक ही पुत्र प्रतिविन्ध्य था। उसी के भविष्य की चिन्ता करते हुए वह वर मांगती है, न कि कथित पांच पुत्रों की फिक्र कर रही है।

विस्तारमय से निबन्ध को समाप्त करते हुए निवेदन है एक लाख श्लोकों के वर्तमान महाभारत में साढ़े चार हज़ार श्लोकों को खोजना सम्भव है परन्तु इसके लिए आपको अहा, तर्क व प्रमाण की छलनी लेकर उसी प्रकार प्रयत्न करना होगा जिस प्रकार शुद्ध दूध में पड़े अवांछनीय वस्तु को निकालने हेतु बाज़ार में बिकने वाली छलनी का प्रयोग आप करते हैं।

# वेदवाणी

## प्रभु कृपा से

**वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।**
**प्रजावन्तः सचेमहि।।** -ऋ० १०/५७/६

**विनय**-हे सोम! तुम्हारा दिया हुआ, तुम्हारी महाशक्ति का अंशभूत मन हमारे शरीरों में विद्यमान है। इस मन का-इस तुम्हारी अमूल्य देन का हमें गर्व है। इस मन के कारण ही हम मनुष्य हैं। इस मननशील के कारण ही हम पशुओं से ऊंचे हुए हैं। तो क्या अपने शरीरों में मन जैसी प्रबल शक्ति को धारण किए हुए भी हम लोग तुम्हारे व्रत में न रह सकेंगे ? निःसन्देह तुम्हारे व्रत का पालन करना बड़ा कठिन है। तुमने जगत् में जो उन्नति के नियम बनाए हैं, ठीक उनके अनुसार चलना बड़ा दुःसाध्य है, परन्तु जहां तुमने ये कठिन नियम बनाए हैं वहां तुमने ही हममें मन की अतुल शक्ति भी दी है, अतः हमारा दृढ़ निश्चय है कि हम अपनी मनःशक्ति के प्रयोग द्वारा सदा तुम्हारे व्रत में ही रहेंगे-कभी इसको भङ्ग न करेंगे-कठिन-से-कठिन प्रलोभन व विपत्ति के समय में भी मनःशक्ति द्वारा व्रत में स्थिर रहेंगे।

परन्तु यह सब व्रत पालन किस लिए है ? यह तुम्हारी सेवा के लिए है। यह तुम्हारा दिया मन इसी काम के लिए है। हम चाहते हैं कि केवल यह हमारा मन ही नहीं, किन्तु हमारे मन की प्रजा भी तुम्हारी सेवा में ही काम आए। मन में जो एक रचना-शक्ति है, उस द्वारा प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कुछ रचना कर जाए, कुछ निर्माण कर जाए। यह रचना ही मन की प्रजा है। यदि हम, हे सोम! सर्वथा तुम्हारे व्रत में होंगे तो हमारी यह रचना (प्रजा) भी निःसन्देह तुम्हारी सेवा के लिए ही होगी-इसी में व्यय होगी एवं, हम और हमारी प्रजा सदा तुम्हारी सेवा में रहें, तुम्हारी सेवा में ही अपना जीवन बिता दें। अब यहीं संकल्प है, यही इच्छा है, यही प्रार्थना है।

-वैदिक विनय से साभार

## वार्षिक महोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ओडिशा में आर्यों के तीर्थस्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना का 49वां वार्षिक महोत्सव माघ कृष्ण त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या तदनुसार 6, 7, 8 फरवरी 2016 शनि, रवि, सोम, को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।

महोत्सव के अवसर पर चौ. शीशराम आर्य की पुण्य स्मृति में 1 फरवरी से भगवान् की दिव्य वाणी ऋग्वेद के पावन मन्त्रों से महायज्ञ पंडित विशिकेसन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में तथा श्री मनुदेव वाग्मी की व्यवस्था में सम्पन्न होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति 8 फरवरी को प्रातः 11 बजे श्रद्धामय वातावरण में सम्पन्न होगी। सभी यज्ञप्रेमी सज्जन इस महायज्ञ में यजमान बनकर घी, सामग्री आदि देकर पुण्य के भागी बनें। महोत्सव के शुभ अवसर पर चौ. मित्रसेन आर्य की पुण्यस्मृति में परममित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से 7 फरवरी को तीन विद्वानों को साल, श्रीफल तथा इक्कीस हजार की थैली से सम्मान किया जाएगा।

गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन 7 फरवरी को होगा। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के द्वारा अनेक प्रकार के योगासन, प्राणायाम, मुद्गर, धनुर्विद्या, तलवार चालन, छड़ मोड़ना, छाती में पत्थर फोड़ना, जंजीर तोड़ना आदि रोमांचक एवं आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन श्री डॉ० कुन्जदेव जी मनीषी के नेतृत्व में होगा।


# गुरुकुल का आयुर्वेद महान
## घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

**गुरुकुल च्यवनप्राश**
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

**गुरुकुल पायोकिल**
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

**गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी**
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

**गुरुकुल ब्राह्मी रसायन**
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

**गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका**
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

**गुरुकुल मधु**
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

**गुरुकुल चाय**
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

**अन्य प्रमुख उत्पाद**
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार** डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871


श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।